

कछुआ और खरगोश 🐢 🐇

एक बार की बात है, एक जंगल में एक खरगोश और एक कछुआ रहते थे। खरगोश बहुत तेज दौड़ता था और उसे अपनी रफ्तार पर बहुत घमंड था।

एक दिन उसने कछुए का मज़ाक उड़ाते हुए कहा,
"तू कितना धीमा है! क्या तू मेरे साथ दौड़ लगाएगा?"

कछुआ शांति से मुस्कराया और बोला,
"क्यों नहीं? चलो दौड़ लगाते हैं।"

दौड़ की शुरुआत हुई। खरगोश तो दौड़ता हुआ बहुत आगे निकल गया। रास्ते में उसने पीछे मुड़कर देखा — कछुआ बहुत दूर था।

"मैं तो बहुत आगे हूँ, थोड़ा आराम कर लेता हूँ," यह सोचकर वह एक पेड़ के नीचे सो गया।

कछुआ धीरे-धीरे पर लगातार चलता रहा। उसने कभी रुकावट नहीं डाली। कुछ समय बाद वह खरगोश के पास से भी गुजर गया।

जब खरगोश की नींद खुली, तो वह तेजी से दौड़ा, लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी। कछुआ जीत चुका था।

नैतिक शिक्षा (Moral):

धीरे और लगातार चलने वाला ही अंत में जीतता है।